# होरास्कन्ध

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

मानवजीवन के सुख-दुःख, इष्टानिष्ट आदि सभी शुभाशुभ विषयों का विवेचन करने वाले शास्त्र ही होराशास्त्र है। होरा शब्द की उत्पत्ति अहोरात्र शब्द से हुई है। अहोरात्र का दूसरा नाम होरा होता है। अहोरात्र के पूर्ववर्ण 'अ' और अन्त्य वर्ण 'त्र' के लोप होने से बीच के 'होरा' ये दो अक्षर बाकी रह जाते हैं। होरा लग्न को भी कहते हैं। यह 'होरा' मनुष्य के पूर्व जन्मार्जित शुभाशुभ कर्मफल को प्रकाशित करता है-

**होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।**

**कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत् तस्य पङ्क्तिं समभिव्यनक्ति।।**

होरास्कन्ध में मुख्यतया ग्रह एवं राशियों का स्वरूपवर्णन, ग्रहों की उच्च-नीच, मित्रामित्र, बलाबल का विचार, द्वादश भावों द्वादशभावों द्वारा विचारणीय विषय एवं उनमें स्थित ग्रहों का शुभाशुभ फलविवेचन, जातक का अरिष्टविचार, अनेकविध शुभाशुभ योगविचार, सूर्यकृत योग, चन्द्रकृत योग, नाभसयोग, आयुर्दायविचार, आयुर्दायविचार, अष्टकवर्गविचार, होरा-सप्तमांशादि दशवर्गसाधन, ग्रहविशोपकादि बलसाधन, विंशोत्तरी आदि दशान्तर्दशादि का साधन, नक्षत्रादिजननफलविचार आदि विषय सम्मिलित हैं। वस्तुतः होराशास्त्र के विभिन्न मानकग्रन्थों में एक समान रूप से उपर्युक्त सभी विषय न होकर न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते हैं। वर्ण्यविषय में न्यूनाधिकत्व होते हुए भी सभी मुख्य उद्देश्य व्यष्टिगत फलविवेचन अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति एवं तदनुसार दशा इत्यादि के आधार पर शुभाशुभ फलकथन करता है।

होराशास्त्र के ज्ञान से मनुष्य भावी सुख-दुःखादि को जानकर अपने पौरुष से उसे अनुकूल बना सकता है। यह शास्त्र मनोवैज्ञानिक रूप से दुःखादि अशुभ परिस्थितियों को झेलने का सम्बल प्रदान करता

है। इस प्रकार प्राणीमात्र पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का अध्ययन कर फलकथन करना एवं मानवजीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर उसे समुचित मार्गनिर्देशन ही होराशास्त्र की लोकोपयोगिता को सिद्ध करता है।

कुछ विद्वानों का कथन है कि जब पूर्वजन्मार्जित शुभाशुभ कर्मों के फल की प्राप्ति अवश्यम्भावी है तो उसका ज्ञान कराने वाले होरास्कन्ध की क्या आवश्यकता है क्योंकि जो होना है, वह तो होकर ही रहता है। परन्तु ऐसा नहीं है। सम्पूर्ण रूप से भाग्य के भरोसे बैठकर ही यदि कृषक खेती करना छोड़ दे तो अन्नादि की उत्पत्ति कैसे होगी? नीति वचनों में भी कहा गया है-नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः'। होराशास्त्र तो कर्मप्रधान शास्त्र है जो पूर्वजन्मार्जित कर्मों के फल को क्रियमाण कर्म के द्वारा न्यूनाधिक करने में विश्वास करता है। कुछ विद्वानों का कथन है कि यदि होराशास्त्र के द्वारा कर्मविपाक को न्यूनाधिक किया जा सकता है तो श्रीराम, युधिष्ठिर जैसे शक्तिमान एवं सामर्थ्यशाली व्यक्तियों को दुःख नहीं उठाना पड़ता। अथवा होराशास्त्र के द्वारा भविष्यफल जानकर किसी को भी कभी दुःख नहीं उठाना पड़ेगा। यहाँ कर्मों की विचित्रता को ध्यान में रखना है होगा। कुछ कर्म दृढ या स्थिर होते हैं तथा कुछ शिथिलमूलक या उत्पातसंज्ञक।

जहाँ पर  जन्मपत्रिकादि से दशाफलकालक्रमद्वारा रोगसम्भावना या अरिष्ट सम्भावना है, अथवा जब सन्तान, विद्या, धनादि का अभाव होने के कारण प्रकट होता है वहाँ ग्रहशान्ति, मणिधारण, मंत्रजाप, दान, औषधिधारण आदि उपचारों से प्रतिबन्धक योगों को शिथिल करने का प्रयास किया जा सकता है। जिस प्रकार दृढमूल वृक्ष भी प्रबल झंझावात से हिलकर जीर्ण या कमजोर हो जाता है, उसी प्रकार दृढकर्मों का अशुभ फल भी कम किया जा सकता है। इसीलिए सूक्ति है- हन्यते दुर्बलं दैवं पौरुषेण विपश्चिता। शुभाशुभप्रद भाग्य कब फलीभूत होगा? अपना पूर्ण फल देगा या कुछ कम? इत्यादि का ज्ञान भी होराशास्त्र से ही सम्भावित है। यह शास्त्र शुभाशुभफलविपाक को जन्मकुण्डली के लग्नादिद्वादश भावों में स्थित स्वोच्च मूल, त्रिकोण, स्वगृह, मित्रगृहादि शुभस्थानों अथवा शत्रुगृह, नीचगृह, अस्तादि अशुभ स्थानों या स्थितियों में स्थित नवग्रहों के परस्पर शुभाशुभ सम्बन्धों के आधार पर दशान्तर्दशादि के

माध्यम से दिन, पक्ष, मास, वर्षादि के रूप में सूचित करता है। इसके आधार पर शुभाशुभफलविषयक समय में मनुष्य यथासम्भव जागरूक होकर मणि, मन्त्र, औषधि आदि उपायों से अशुभफल को न्यून तथा शुभ ग्रह के बल में वृद्धि करके सत्फल प्राप्त कर सकता है।

होराशास्त्र के ज्ञान से मनुष्य भावी सुख-दुःखादि का ज्ञान कर अपने पौरुष से उसे अनुकूल बना सकता है। यह शास्त्र मनोवैज्ञानिक रूप से उसे दुःखादि अशुभ परिस्थितियों को झेलने में सम्बल प्रदान करता है। इस प्रकार प्राणीमात्र पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का अध्ययन कर फलकथन करना एवं मानव जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर उसे समुचित मार्गदर्शन देना ही होराशास्त्र की लोकोपयोगिता सिद्ध करता है। यह शास्त्र रोग के साध्यासाध्यत्वादि का निर्णय करके एवं उसके सम्भावित काल का अनुमान प्रस्तुत कर आयुर्वेद की महान् सहायता करता है। इसी प्रकार जातक की अभिरुचि, दक्षता, स्वभावादि का विश्लेषण करके उसे भावी जीवन में अपने कार्यक्षेत्र का चुनाव करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

होराशास्त्र के कतिपय सिद्धान्तों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है-

- सूर्यादि समस्त ग्रह जिस स्थान में बैठे हों, उससे सप्तम स्थान को पूर्णदृष्टि से देखते हैं तथा विशेषतः शनि तीसरे-दशवें, गुरु पाँचवें-नवें और मंगल चौथे-आठवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है-

**पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजादयः।**

**विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान्।।**

- सभी ग्रह त्रिकोणेश होने पर शुभ फल देते हैं और यदि तीसरे, छठे और एकादश स्थान के स्वामी हों तो अशुभ फल देते हैं-

**सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदा।**

**पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदा।।**

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

- जिस जातक का जन्म मेषराशि के चन्द्रमा में होता है, वह चंचल नेत्रों वाला, प्रायः रोगी, धर्म और धन दोनों का मूल्याङ्कन करने वाला, भारी जंघाओं वाला, कृतघ्न, पापरहित, राजा को मान्य, कामिनियों को आनन्दित करने वाला, दानी, जल से भयभीत रहने वाला और कठोर कार्य करने वाला परन्तु अन्त में विनम्र होता है-

**लोलनेत्रः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः।**
**पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।**
**कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।**
**चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।**

- पञ्चमभाव शुक्रक्षेत्र में शुक्र यदि विद्यमान हो तथा लग्नस्थान यदि भौमयुक्त हो तो जातक प्रचुर द्रव्यमान होता है-

**पञ्चमे भार्गवक्षेत्रे तस्मिन् शुक्रेण संयुते।**
**लाभे भूमिसुतोपेते बहुद्रव्यस्य नायकः।।**

- लग्नेश व्ययस्थ और व्ययेश लग्नस्थ हो और मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता है-

**लग्नेशौ रिष्फगे रिष्फाधिपे लग्नगते सति।**
**मारकेशयुते दृष्टे निर्धनो मनुजो भवेत्।।**

होरास्कन्ध पर ऋषि जैमिनिकृत 'जैमिनीसूत्र' ग्रन्थ है जो सूत्रपद्धति के द्वारा फलकथन हेतु प्रसिद्ध है। पराशरमुनिकृत बृहत्पाराशरहोराशास्त्र को होरास्कन्ध का सम्पूर्ण ज्ञान कराने वाला ग्रन्थ कहा जा सकता है। इनका लघुपाराशरी नामक अन्य ग्रन्थ भी समुपलब्ध है। आचार्य वराहमिहिर रचित बृहज्जातक और लघुजातक अप्रतिम ग्रन्थ हैं। अन्य ग्रन्थों का नामोल्लेख मात्र किया जा रहा है-

| **ग्रन्थ** | **रचयिता** |
|---|---|
| सारावली | कल्याणवर्मा |

| | |
|---|---|
| षड्पञ्चाशिका | पृथुयशा |
| केवलज्ञानहोरा | चन्द्रसेन |
| रत्नावली | श्रीपति |
| अद्भुतसागर | बल्लालसेन |
| भुवनदीपक | पद्मसूरि |
| जातकपद्धति | केशव |
| जातकपारिजात | वैद्यनाथ |

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi